



ISSN Print: 2394-7500
 ISSN Online: 2394-5869
 Impact Factor: 8.4
 IJAR 2021; 7(10): 284-288
www.allresearchjournal.com
 Received: 07-08-2021
 Accepted: 10-09-2021

सुधीर कुमार त्रिपाठी

शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., सीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. डी.एस. सिंह बघेल

सेवानिवृत्त आचार्य शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, सीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन

सुधीर कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. डी.एस. सिंह बघेल

सारांश

शोधार्थी ने सीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। पर्यावरण हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पर्यावरण के बिना जीवन की सकल्पना निर्मल है। मानव हो या जीव सभी पर्यावरण पर आश्रित है। पृथ्वी पर विविध प्रकार का पर्यावरणीय प्रदूषण व्याप्त है, जिनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, वनों का विनाश, मिट्टी को होने वाली विविध हानियाँ, ग्रीन हाउस उष्णीकरण, ओजोन की परत का क्षयशील होना आदि प्रमुखता से अपना स्थान रखते हैं। पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति बहुविषयक होती है, जिसके लिये कौशल की आवश्यकता होती है एवं वह कौशल अपने अन्तर्गत कई विषयों यथा-रसायन, जीवविज्ञान, पृथ्वी विज्ञान, गणित, भूगोल, कला, भौतिकी, इतिहास आदि को अंतर्गृहीत किये रहता है। पर्यावरण अध्ययन द्वारा विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों पर प्रकाश पड़ता है। इसके द्वारा समाज में पर्यावरण क्षेत्र से संबंधित कई आयाम विकसित होते हैं जिनका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है एवं पर्यावरणीय रूप से वे काफी महत्वपूर्ण भी होते हैं। पर्यावरण अध्ययन एवं पर्यावरण की समझ के विकास हेतु आमजन को जागरुक होने की आवश्यकता है ताकि उन्हें यह ज्ञात हो कि हमारे वातावरण में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनके द्वारा मानव जीवन कैसे प्रभावित हो रहा है। इस हेतु उनमें पर्यावरण की समझ विकसित करना आवश्यक है ताकि वे अलग-अलग समस्याओं से अवगत हो सकें।

कूटशब्द : सीवा जिला, माध्यमिक स्तर, छात्र-छात्राएँ, पर्यावरण प्रदूषण, जागरुकता।

प्रस्तावना:

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ने से पूरे विश्व में नए उपाय किए जा रहे हैं। स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी 1972 में स्टाकहोम सम्मेलन में सम्मिलित होने वाली अकेली राष्ट्र अध्यक्ष थीं, जिसे संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन का नाम दिया गया। 20 वर्ष पश्चात रियो सम्मेलन को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन कहा गया। सबसे पहले इन्दिरा गांधी ने संकेत किया कि गरीबी सबसे अधिक प्रदूषण फैलाती है और जब तक इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के माध्यम से दूर नहीं किया जाएगा तब तक इस ग्रह को पर्यावरणीय आपदा से बचाने की बात करना बेकार है। यू.एन.डी.पी., विश्व बैंक तथा संयुक्त राष्ट्र की अन्य संस्थाएं अवलम्बनीय विकास हेतु गरीबी उन्मूलन की पैरवी कर रही हैं। निःसंदेह पर्यावरण और विकास की नीतियां एक-दूसरे की पूरक हैं फिर भी दीर्घकालिक पर्यावरणीय हितों की आवश्यकता तथा विकास की तत्कालिक जरूरतों के बीच विवाद को सुलझाने की जरूरत है।

विकास और प्रगति के नाम पर हमने प्रकृति और उसके निरन्तर चलते रहने वाले चक्र को गड़बड़ा दिया है और मानवकृत सुविधाओं के अहम् के आधार पर हम उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। सत्य यह है कि बिना अच्छे प्राकृतिक पर्यावरण के हम न तो सुखमय वर्तमान जी सकते हैं और न ही भविष्य की शान्तिप्रद आश्वस्तता सोच सकते हैं। यह ठीक है कि आज की वैज्ञानिक प्रगति और विकसित तथा विकासशील देशों की परस्पर आगे बढ़ने की होड़ में हर देश को विकास के पथ पर बढ़ना है, पर विकास को 'पर्यावरण के विनाश' के नाम पर तौलना भी उचित नहीं है। विनाश रहित विकास हमारा ध्येय और नारा होना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि जब हम पर्यावरण प्रबन्ध की बात करते हैं तो हमें उसे पारिस्थितिकी के परिप्रेक्ष्य में ही सोचना चाहिए। फाहीमुद्दीन अहमद ने अपने लेख में लिखा है – "विश्व के विकास के लिए तकनीकी प्रगति एक राष्ट्रीय आवश्यकता है, अतः उसे रोका नहीं जाना चाहिए, आवश्यकता इस बात की है कि पर्यावरण का प्रबन्ध और उसकी योजनाएँ पारिस्थितिकी अवधारणाओं, तरीके और कार्य-प्रणालियों की समझ पर आधारित किसी भी देश में जनसंख्या विशेषज्ञ, जिन्हें सामान्यतया अंग्रेजी के प्रचलित नाम डेमोग्राफर्स के नाम से जाना जाता है, उस देश की घटती-बढ़ती जनसंख्या

Corresponding Author:

सुधीर कुमार त्रिपाठी

शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., सीवा, मध्य प्रदेश, भारत

तथा देश में उपलब्ध विभिन्न संसाधन, भौगोलिक स्थिति, लोगों का रहन-सहन और रीति-रिवाज के आधार पर यह आधिकारिक रूप से बताने में सक्षम होते हैं कि अगले वर्षों में इस देश की क्या स्थिति होगी? कौन-सी विपदायें या घटनायें आने वाली या घटित होने वाली हैं और उनका देशवासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? उनका यह सामाजिक दायित्व होता है कि वे देश के शासन को सभी वस्तुस्थितियों से अवगत करा दें। निःसन्देह इस प्रकार के निर्णय में जनसंख्या की बहुत अधिक भूमिका होती है।" हमारे देश में भी माध्यमिक स्तर पर असंतुलित होते हुए पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित करने के लिए विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम रखे गये हैं। उच्च स्तर पर इन पाठ्यक्रमों की विविधता तथा प्रभावशीलता और अधिक बढ़ाई गई है। पर्यावरण प्रदूषण से लगातार गड़बड़ाते प्रकृति चक्र को संतुलित कर विरासत में सुंदर और व्यवस्थित भविष्य हेतु पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करना एवं प्राकृतिक संसाधनों का विशाल भंडार भी लगभग सीमित है, उनके उचित तथा बुद्धिमता पूर्ण उपयोग से छात्र/छात्राओं को लाभान्वित करना शोध का औचित्य है। माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा जो हम विद्यार्थियों को दे रहे हैं उसे वे किस सीमा तक ग्रहण कर पाते हैं। पर्यावरण शिक्षा से छात्र-छात्राओं की प्रवृत्तियों, आदतों, विचारों, कौशलों, अभिवृत्तियों, रुचियों और व्यवहार में क्या और कितना परिवर्तन हो रहा है तथा समग्र शिक्षा पर इसका प्रभाव किस सीमा तक वांछित दिशा में हो रहा है। यदि किसी प्रकार की रुकावट है तो क्यों? यह रुकावट किस प्रकार दूर की जा सकती है? एवं भविष्य में क्या परिवर्तन किया जाय कि लक्ष्य की प्राप्ति हो सकें।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व –

पर्यावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन किए बिना जीवन को समझ पाना असम्भव है। पर्यावरण की रक्षा करने में लापरवाही बरतने का अर्थ अपना विनाश करना है। हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरणीय संसाधनों का प्रयोग करते हैं। इन संसाधनों में कुछ का नवीकरण हो सकता है और कुछ का नहीं। हमें कोयला और पेट्रोलियम जैसे गैर नवीवृफत संसाधनों का प्रयोग करते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए, जो समाप्त हो सकते हैं। मानव की सभी क्रियाओं का पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। पिछली दो सदियों से जनसंख्या में हुई तीव्र वृद्धि तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुए तीव्र विकास से पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव कई गुना बढ़ गया है। पर्यावरण की गुणवत्ता को कम करने तथा इसके क्षरण के लिए ये दो कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं।

पर्यावरण क्षरण से मानव के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है। हमें शीघ्र ही यह जान लेना चाहिए कि मानव जाति के कल्याण एवं अस्तित्व के लिए पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधर आवश्यक है। भूमि, वायु और पानी जैसे प्रावृफतिक संसाधनों का प्रयोग बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए स्वस्थ पर्यावरण को सुनिश्चित किया जा सके।

वर्तमान समय में मनुष्य औद्योगिकीकरण और नगरीकरण में इस तरह से गुम हो चुका है कि वह स्वार्थपूर्ति के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने लगा है और पर्यावरण को असंतुलित बनाए हुए है। परिणामस्वरूप मनुष्य को प्रदूषण, बाढ़, सूखा आदि आपदाओं का सामना करना पड़ता है। यदि मनुष्य प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य तत्वों की श्रृंखला का सुरक्षित तरीके से उपभोग करे तो पर्यावरण को संरक्षित रखा जा सकता है।

विश्व के सभी देशों का दायित्व है कि वे वैज्ञानिकों द्वारा दी गई, चेतावनियों को ध्यान रखते हुए नीतियाँ बनाए एवं विश्व कल्याण हेतु सर्वमान्य समझौतों को क्रियान्वित करवाए। संपोषणीय विकास की चुनौती अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा है। वन्य जीव संरक्षण को भी

संपोषणीय विकास की राजनैतिक धारणा के संदर्भ में रखा जाता है। जल संरक्षण हेतु नीति निर्धारण व क्रियान्वयन आवश्यक है। जल संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। गरीबी, पिछड़ापन, स्वास्थ्य आदि जैसे पक्ष भी संपोषणीय विकास व राजनैतिक धारणा से सम्बन्धित चुनौतियाँ हैं। पर्यावरण शिक्षा द्वारा आम जन में संपोषणीय विकास की चेतना जागृत करना एवं सन्तुलन का महत्व समझाना अत्यन्त आवश्यक है।

उद्देश्य – शोध समस्याओं के समाधान की दिशा में शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। पर्यावरण जागरूकता के प्रति शिक्षा द्वारा छात्र-छात्राओं की मानसिक, शारीरिक चेतना का विकास करना।

परिकल्पना

परिकल्पना समस्या का अनुमानित एवं काल्पनिक उत्तर होता है जिसे शोधकर्ता पूर्व कल्पना के आधार पर निर्मित करता है तथा प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से परिकल्पना को सत्य या असत्य सिद्ध करने का प्रयास करता है। प्रस्तुत शोध समस्या की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं –

1. छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता में अन्तर पाया जायेगा।

परिसीमांकन – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्योंथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज है। चूंकि रीवा जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी माध्यमिक विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5-5 विद्यालय कुल 45 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि (Random sampling) द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हैं जो अपने-अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है तथा ये विद्यालय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का उचित प्रतिनिधित्व करते हैं।

न्यादर्श :

शोध लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु शासन द्वारा संचालित पर्यावरण जागरूकता के प्रभावों का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 2-2 शिक्षक कुल 90 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, 2-2 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र और 10 छात्राएँ कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार लिया गया है।

अध्ययन पद्धति –

शोधार्थी का शोध वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण मूलक अनुसंधान की श्रेणी में आता है। शोध कार्य के दौरान निम्न शोध विधियों एवं उपकरणों का समावेश किया गया है—

साक्षात्कार विधि : शोधार्थी ने अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित तथ्यों के विषय में गहन एवं विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने हेतु अनेक व्यक्तियों से साक्षात्कार किया है। शोध क्षेत्र रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए छात्र, शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावक से इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन, परिणाम व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया।

चयनित विधियों में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. साक्षात्कार पत्रक
2. प्रश्नावली

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किये गये कार्यों की संक्षिप्त समीक्षा
किसी भी अध्ययन कार्य को करने से पहले उस विषय से संबंधित पूर्व विद्वानों के कार्यों का अवलोकन उससे संबंधित साहित्य के अध्ययन से अध्ययन कार्य में सहायता मिलती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने अपने सीमित प्रयासों से नजदीकी विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भ्रमण किया तथा विषय से संबंधित पूर्व में किए गए अनुसंधानों का अध्ययन किया, जो निम्नानुसार है – गर्ग, रूप किशोर और प्रकाश तातेड (1988); जरीना और अब्दुल समद (2013); कपिल, एच.के. (1996); पारकर, डी.सी. (1974); पुरोहित, श्याम सुन्दर (1991), रोली (1995) एवं कुमार, राकेश एवं झाझडिया, मनोज (2016) ने छात्रों के पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का अध्ययन किया है।

शोध क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का

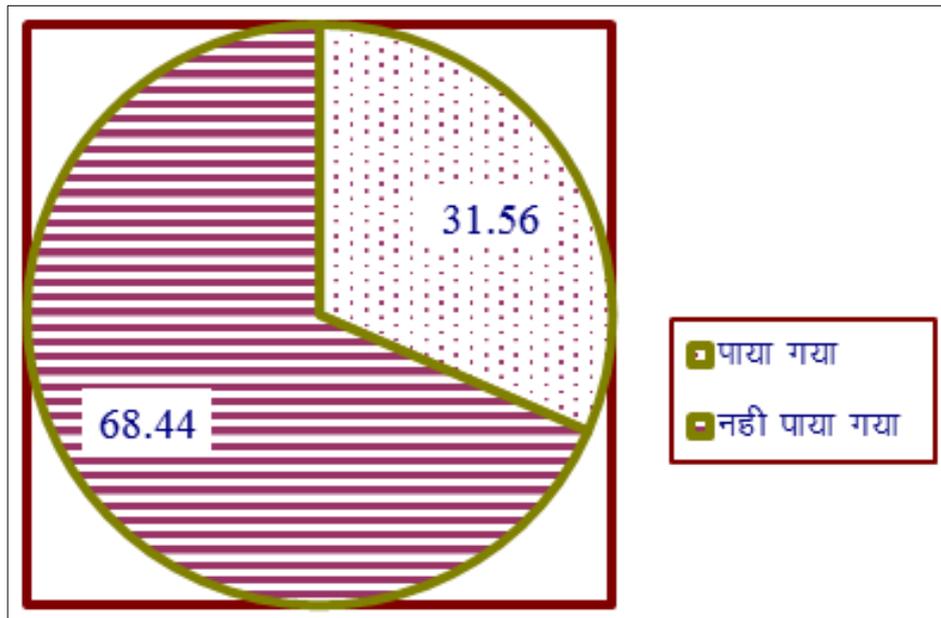
नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व-उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18° उत्तरी अक्षांश से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81.2° पूर्वी देशांश से 82.18° पूर्वी देशांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में संकलित किये गये प्रदत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नानुसार है –

सारणी क्र. – 1: छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का अध्ययन

क्र.	जानकारी संकलन के स्रोत	न्यादर्श में चयनित संख्या	छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता में अन्तर			
			पाया गया		नहीं पाया गया	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	45	12	26-67	33	73-33
2.	शिक्षक	90	28	31-11	62	68-89
3.	अभिभावक	90	31	34-44	59	65-56
	योग	225	71	31-56	154	68-44



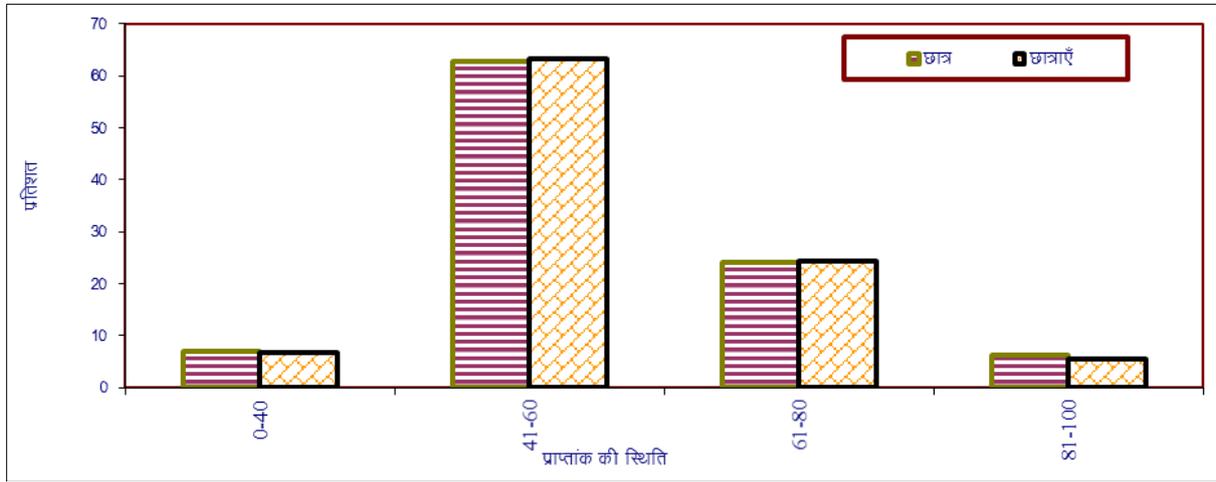
आरेख क्र. 1: छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का अध्ययन

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख क्र. 1 में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता के संबंध में प्राथमिक स्रोत से जानकारी संकलित किया गया। संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि

33 (73.33 प्रतिशत) प्राचार्य, 62 (68.89 प्रतिशत) शिक्षक व 59 (65.56 प्रतिशत) अभिभावकों के अभिमतानुसार छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता में अन्तर नहीं पाया गया।

सारणी क्र. – 2: छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का अध्ययन (आधार छात्र परीक्षण पत्रक)

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0-40	31	6.89	30	6.67
2.	41-60	282	62.67	285	63.33
3.	61-80	109	24.22	110	24.44
4.	81-100	28	6.22	25	5.56



आरेख क्र. 2: छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का अध्ययन (आधार छात्र परीक्षण पत्रक)

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक – 2 में न्यादर्श हेतु चयनित 450-450 कुल 900 छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता के संबंध में छात्र परीक्षण पत्रक द्वारा आंकड़े यह दर्शाते हैं कि, शोध क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 900 छात्र/छात्राओं में से 31 छात्र एवं 30 छात्राएँ 0-40 अंक, 282 छात्र एवं 285 छात्राएँ 41-60 अंक, 109 छात्र तथा 110 छात्राएँ 61-80 अंक और 28 छात्र तथा 25 छात्राएँ 80 अंक से अधिक

प्राप्त कर लिया है।

शोध क्षेत्र में छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप 6.89 प्रतिशत छात्र एवं 6.67 प्रतिशत छात्राएँ 0-40 अंक, 62.67 छात्र और 63.33 प्रतिशत छात्राएँ 41-60 अंक, 24.22 प्रतिशत छात्र और 24.44 प्रतिशत छात्राएँ 61-80 अंक और 6.22 प्रतिशत छात्र तथा 5.56 प्रतिशत छात्राएँ 81 अंक अधिक प्राप्ति कर ली है।

सारणी क्र. 3: मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता के परीक्षण 't' अनुपात की सारणी

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0.01 स्तर	0.05 स्तर	
1.	छात्र	450	55.78	13.84	2.58	1.96	0.19
2.	छात्राएँ	450	55.60	13.59			

$$d.f = (N_1 - 1) + (N_2 - 1) \\ = (450 - 1) + (450 - 1) \\ = 449 + 449 = 898$$

उपर्युक्त सारणी क्र. 3 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप का औसत उपलब्धि 55.78 तथा मानक विचलन 13.84 है। छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप का औसत उपलब्धि 55.60 तथा मानक विचलन 13.59 है।

शोध क्षेत्र के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना श्ज परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त श्ज का मान 0.19 है।

898 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.19 है। जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता में अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष –

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में 73.33 प्रतिशत प्राचार्य, 68.89 प्रतिशत शिक्षक व 65.56 प्रतिशत अभिभावकों के अभिमतानुसार छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता में अन्तर नहीं पाया गया।

- शोध क्षेत्र में छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप 6.89 प्रतिशत छात्र एवं 6.67 प्रतिशत छात्राएँ 0-40 अंक, 62.67 छात्र और 63.33 प्रतिशत छात्राएँ 41-60 अंक, 24.22 प्रतिशत छात्र और 24.44 प्रतिशत छात्राएँ 61-80 अंक और 6.22 प्रतिशत छात्र तथा 5.56 प्रतिशत छात्राएँ 81 अंक अधिक प्राप्ति कर ली है। अर्थात् छात्र-छात्राओं में समान जागरुकता पाया गया है।

- शोध क्षेत्र के छात्रों में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप का औसत उपलब्धि 55.78 तथा मानक विचलन 13.84 है। छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता पर सार्थक रूप का औसत उपलब्धि 55.60 तथा मानक विचलन 13.59 है। गणना से प्राप्त श्ज का मान 0.19 है। 898 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान 0.19 है। जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्र-छात्राओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता में अन्तर नहीं पाया गया।

सुझाव –

- छात्रों में सैद्धान्तिक ज्ञान को प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक कार्य द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में पहुंचाना चाहिये, ताकि उनमें वैज्ञानिक धारणा का विकास हो सके।

2. छात्रों की आवश्यकता एवं पाठ्यक्रम के अनुसार समय-समय पर पर्यावरण शिक्षा के बारे में शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं संरक्षण की नवीन गतिविधियों से परिचित हो सके।
3. छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कर उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक तथा पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के कारणों से अवगत कराने हेतु क्षेत्रीय जलवायु, भूमि, वन सम्पदा, नदियों तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों पर आधारित ज्ञान प्रदान करना चाहिये।

सन्दर्भ—

1. गर्ग, रूप किशोर और प्रकाश तातेड़ (1988), पर्यावरण शिक्षा, उदयपुर (भारत): पर्यावरण सामुदायिक केन्द्र, पृष्ठ 36.
2. जरिना और अब्दुल समद (2013), सेकेंडरी स्कूल में विज्ञान के शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता पर पर्यावरण विशेषज्ञों के सर्वेक्षण का अध्ययन।
3. कपिल, एच.के. (1996), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. पारकर, डी.सी. (1974), एन एनालिसिस आफ एन्वायरनमेन्टल एटीट्यूड्स एज मेजर्ड बाई ए मोडिफाइड सीमेंटिक डिफरेंशियल इन्सट्रुमेन्ट. डिजर्टेशन एब्सट्रेक्ट्स इन्टरनेशनल, 35, 7142.
5. पुरोहित, श्याम सुन्दर (1991), पर्यावरण शिक्षा (द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण), बीकानेर (भारत) : अजन्ता बुक्स, 1991. पृष्ठ 64.
6. रोली, एस. (1995), जबलपुर जिले में पर्यावरण शिक्षा की दिशा में हाई स्कूल के शिक्षकों की जागरूकता की दृष्टिकोण की जाँच का अध्ययन।
7. कुमार, राकेश एवं झाझडिया, मनोज, पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के ज्ञान तथा अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Education and Science Research 2016;3(1):19-24.